समाज की उन्नति की आधारशिला रखता है साहित्य

कहते हैं कि साहित्य ही समाज का असली दर्पण होता है। समाज में जो भी घटित होता है, मतलब कि समाज में जो भी गतिविधियां होतीं हैं, लेखक उनसे कहीं न कहीं प्रभावित होता है और वह अक्सर उन्हीं चीजों, घटनाओं, गतिविधियों को अपने साहित्य में अपनी कलम के माध्यम से काग़ज़ के कैनवास पर उतारता है और समाज को अपने विचारों के माध्यम से दर्शाता है। यह साहित्य ही होता है जो किसी भी समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। दूसरे शब्दों में कहें तो एक साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग होता है और वह साहित्य की रचना भी समाज के माध्यम से ही करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह साहित्यिक रचना ही होती है जो समाज के नवनिर्माण में पथप्रदर्शक की भूमिका निभाती है।

कुल मिलाकर यह बात कही जा सकती है कि साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्तमान को चित्रित करने का कार्य करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है। हाल ही में प्रख्यात साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को वर्ष 2024 के लिए 59 वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। श्री शुक्ल को हिंदी साहित्य में उनके अद्वितीय योगदान, सृजनात्मकता और विशिष्ट लेखन शैली के लिए भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि वे हिंदी के 12वें साहित्यकार हैं, जिन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

श्री शुक्ल छत्तीसगढ़ के ऐसे पहले लेखक हैं, जिन्हें यह सम्मान मिलने जा रहा है। विकीपीडिया पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार उनका जन्म 1 जनवरी 1937 को भारत के राज्य छत्तीसगढ़ के राजनंदगांव में हुआ और आज वे 88 वर्ष के हैं। उन्होंने प्राध्यापन को रोज़गार के रूप में चुनकर पूरा ध्यान साहित्य सृजन में लगाया। गौरतलब है कि श्री शुक्ल ने उपन्यास एवं कविता विधाओं में खूब साहित्य सृजन किया हैमुख्य रूप से वे हिंदी साहित्य में अपने प्रयोगधर्मी लेखन के लिये प्रसिद्ध हैं। उन्हें जादुई-यथार्थ के आसपास की शैली के रूप में महसूस किया जा सकता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि उनका पहला कविता संग्रह 1971 में लगभग जय हिन्द नाम से प्रकाशित हुआ।

उनके अन्य कविता संग्रहों में क्रमशः वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह (वर्ष 1981), सब कुछ होना बचा रहेगा (वर्ष 1992), अतिरिक्त नहीं (वर्ष 2000), कविता से लंबी कविता (वर्ष 2001), आकाश धरती को खटखटाता है (वर्ष 2006), पचास कविताएँ (वर्ष 2011), कभी के बाद अभी (वर्ष 2012), कवि ने कहा तथा चुनी हुई कविताएँ (वर्ष 2012) व प्रतिनिधि कविताएँ (वर्ष 2013) शामिल हैं। उनके उपन्यासों में क्रमशः नौकर की कमीज (1979), खिलेगा तो देखेंगे (वर्ष 1996), दीवार में एक खिड़की रहती थी (वर्ष 1997), हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़ (वर्ष 2011), यासि रासा त (वर्ष 2017) तथा एक चुप्पी जगह (वर्ष 2018) शामिल हैं।

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है और भारत का कोई भी नागरिक जो भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में से किसी भाषा में उत्कृष्ट लेखन कार्य करता हो, इस पुरस्कार के योग्य हैइस पुरस्कार में ग्यारह लाख रुपये की धनराशि, प्रशस्तिपत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा दी जाती है। गौरतलब है कि वर्ष 1961 में स्थापित प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार वर्ष 1965 में मलयालम लेखक जी. शंकर कुरुप को प्रदान किया गया था। यह पुरस्कार उन्हें उनके काव्य संग्रह 'ओडक्कुज़ल' के लिए प्रदान किया गया था।

जिस समय शंकर कुरुप को यह पुरस्कार प्रदान किया गया था, उस समय पुरस्कार की धनराशि एक लाख रुपए थी तथा 1982 तक यह पुरस्कार लेखक की एकल कृति के लिये दिया जाता था, लेकिन इसके बाद से यह लेखक के भारतीय साहित्य में संपूर्ण योगदान के लिये दिया जाने लगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि शुक्ल जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलना एक ओर जहां पर हिंदी साहित्य जगत के लिए गौरव का विषय है वहीं दूसरी ओर यह उनकी असाधारण रचनात्मकता, मौलिक लेखन शैली और साहित्य के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता,रुचि को दर्शाता है। वे संवेदनाओं को बहुत ही गहराई से काग़ज़ के कैनवास पर उकेरते हैं।

कहना ग़लत नहीं होगा कि उनकी रचनाओं की विशेषता यह है कि वे अत्यंत सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा में लिखी गई होती हैं, लेकिन उनमें गहरी दार्शनिकता और मानवीय संवेदनाएं निहित होतीं हैं। वे जीवन के हर पहलू को गहराई से अध्ययन करते हैं और उसे काग़ज़ पर सहजता और सरलता से पिरो देते हैं। श्री शुक्ल ने अपने लेखन के माध्यम से यह बखूबी दर्शाया है कि साहित्य क्लिष्ट व कठिन शब्दों का खेल मात्र नहीं है, बल्कि साहित्य इससे कहीं ऊपर है। वास्तव में,उन्होंने अपने लेखन से यह दर्शाया है कि साधारण जीवन की छोटी-छोटी बातों में भी असाधारण सुंदरता निहित हो सकती है।सच तो यह है कि संवेदना ही एक ऐसा भाव है, जो साहित्य और समाज को जोड़ता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि संवेदनहीन साहित्य समाज को कभी प्रभावित नहीं कर सकता और वह मात्र मनोरंजन कर सकता है। साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ-साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखंड की विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है, जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है।

8 दिवसीय चेटीचण्ड महोत्सव, भक्ति धाम मंदिर से निकली बहराणा साहिब की यात्रा

इन्दौर । चेटीचण्ड उत्सव समिति द्वारा भगवान झूलेलाल के जन्मोत्सव पर आयोजित 8 दिवसीय चेटीचण्ड महोत्सव की शुरूआत हो चुकी हैं। सिंधी बाहुल्य क्षेत्रों में जहां महिलाओं द्वारा कलश यात्रा की तैयारियां की जा रही हैं तो वहीं दुसरी तरफ युवाओं द्वारा रविवार 30 मार्च को छत्रीबाग स्थित झूलेलाल मंदिर से निकलने वाली भगवान झूलेलाल की भव्य शोभायात्रा की रूपरेखा तैयार करने के साथ ही सभी को जिम्मेदारियां सौंपी जा रही है।

8 दिवसीय महोत्सव की कार्यक्रमों की श्रृंखला में एकता संदेश यात्रा, साईकिल रैली, सिंधी ज्ञान प्रतियोगिता, महिलाओं की वाहन रैली सहित कई कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। सिंधी बाहुल्य क्षेत्रों में अलग-अलग संगठनों द्वारा बहराणा साहिब की यात्रा भी निकाली जा रही हैं जिसमें समाज बंधुओं को भगवान झूलेलाल की शोभायात्रा में शामिल होने का निमंत्रण दिया जा रहा है।

चेटीचण्ड उत्सव समिति अध्यक्ष दयालदास ठाकुर, सचिव अशोक खुबानी, हरिश डाबानी एवं रवि भाटिया ने बताया कि चेटीटण्ड महोत्सव की कमान युवाओं व मातृशक्तियों को भी सौंपी गई है। गुरूवार को स्कीम नं. 103 रहवासी संघ द्वारा अलसुबह भक्तिधाम मंदिर से बहराणा साहिब की यात्रा निकाली। जो विभिन्न मार्गों से होते हुए नवदुर्गा माता मंदिर पहुंची।

जहां आरती के पश्चात इस यात्रा का समापन हुआ। बहराणा साहिब की यात्रा में सिंधी समाज के वरिष्ठजनों के साथ ही महिलाएं, युवा व युवतियां बड़ी संख्या में शामिल हुए।

समाजवादी इंदिरा नगर की गलियों से निकली प्रभातफेरी

इन्दौर। 26 दिवसीय सांई-राम महोत्सव के तहत शहर की चारों दिशाओं में निकलने वाली सांई बाबा की प्रभातफेरी गुरूवार को समाजवादी इंदिरा नगर से निकाली गई। इंदिरा नगर से निकली सांई प्रभातफेरी में दीपावली का नजारा देखने को मिला।

रहवासियों ने अपने घरों पर विद्युत सज्जा करने के साथ ही दीप भी रोशन किए एवं रंगोली भी सजाई। अलसुबह निकली सांई प्रभातफेरी में रहवासियों को मूक परिंदों के लिए छतों पर दाना-पानी रखने का संकल्प भी दिलाया गया। श्री केंद्रीय साईं सेवा समिति धार्मिक एवं मानव सेवा ट्रस्ट अध्यक्ष गौतम सुरेंद्र पाठक, विनीता पाठक एवं प्रभातफेरी आयोजक किशोर दोरकर ने बताया कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सांई बाबा की प्रभातफेरी लाव-लश्कर के साथ निकाली गई। युवाओं द्वारा भगवा ध्वज व वंदनवार से मार्गों पर सजावट की गई तो वहीं मातृशक्तियों द्वारा प्रत्येक घर से बाबा की आरती कर आशीर्वाद लिया गया। प्रभातफेरी के दौरान युवा आतिशबाजी करते नजर आए।

श्री महालक्ष्मी उपासना मंडल पर 30 मार्च से मनेगा 8 दिवसीय वासंतिक नवरात्र उत्सव

दैनिक श्रीसूक्त, अभिषेक, पाठात्मक हवन के साथ प्रवचन भी होंगे

इंदौर। उप डाकघर मार्ग स्थित श्री महालक्ष्मी उपासना मंडल पर 30 मार्च गुड़ीपड़वा से 6 अप्रैल श्रीरामनवमी तक वासंतिक नवरात्र उत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसकी जोरदार तैयारियां चल रही है। इस अवसर पर दैनिक श्री सूक्त अभिषेक, दुर्गासप्त शती पाठात्मक हवन के साथ साथ प्रवचन भी होंगे।

यह जानकारी देते हुए मंडल अध्यक्ष वसंत मोघे और सचिव दिनेश चांदोरकर ने बताया कि इस वर्ष भक्तों में दुगना उत्साह है, क्योंकि कोल्हापुरवासिनी श्री महालक्ष्मीजी का 80वां स्थापना दिवस भी आ रहा है, इसलिए उत्सव में और भी कार्यक्रम जुड़ गए हैं। संस्था उपाध्यक्ष उत्कर्ष गुर्जर ने बताया कि सुबह के सत्र में रोजाना दुर्गा सप्तशती का सामूहिक पाठ और हवन होगा।रोजाना शाम को 5 बजे से 7 बजे तक शंकराचार्य पीठ के वेदमूर्ति धनंजय शास्त्री वैद्य के प्रवचन होंगे। विषय होगा श्री दुर्गा सप्तशती पाठ का महत्व।

गौरतलब है कि वेदमूर्ति धनंजय शास्त्री वैद्य उच्च शिक्षित है, खगोलशास्त्र में पोस्ट ग्रेजुएट है और श्री श्री जगतगुरु शंकराचार्य विद्रतसंघ धर्मसभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष है। साथ ही संकेश्व मठ के धर्म प्रतिनिधि है।

नवरात्रि उत्सव की शुरुआत 30 मार्च रविवार को श्रीगणेश पूजन और पुण्याहवाचन से होगी जबकि समापन दुर्गा सप्त - शती पोथी की शोभा यात्रा से होगी।

चंद्रप्रभु महिला मंडल का भक्तिमय आयोजन

इन्दौर। आदिनाथ जयंती के शुभ अवसर पर प्रारंभ हुई सामूहिक संगीतमय भजन के साथ नृत्यमय भक्ति की श्रृंखला में चंद्रप्रभु महिला मंडल मल्हारगंज की सदस्याओं ने हरे परिधान धारण कर भगवान के समक्ष सामूहिक संगीतमय भजन के साथ नृत्यमय भक्ति की।

आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु महिलाओं ने भाग लिया। डॉली झांझरी ने बताया कि संगीतमय भक्ति की यह पावन श्रृंखला आदिनाथ जयंती के शुभ अवसर से प्रारंभ हुई थी और सतत बीस दिन महावीर जयंती तक अनवरत रूप से जारी रहेगी।

मेंमदी में चल रही सात दिवसीय भागवत कथा

इंदौर। सिमरोल के समीप ग्राम मेंमदी में चल रही सात दिवसीय संगीतमय भागवत कथा के पांचवें दिवस भगवान श्री कृष्ण का जन्म उत्सव मनाया गया।

व्यास पीठ से पंडित संदीप पूरे महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का बड़े ही सुंदर सरल शब्दों में प्रसंग सुनाया। भगवान का जन्म होते ही बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालु भजनों पर झूमते गाते नजर आए।

सभी ने एक दूसरे को श्री कृष्ण के जन्म की बधाइयां दी इस अवसर पर विश्व हिंदू महासंघ के प्रदेश महामंत्री केसर सिंह चंदेल एवं अन्य पदाधिकारीयो ने व्यासपीठ का पूजन किया ।

दिगंबर जैन समाज की प्रभात फेरी श्री महावीर दिगंबर जैन पंचायती मंदिर महालक्ष्मी नगर से निकली

इंदौर। दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद , इंदौर, सोशल रूप फेडरेशन एवं महावीर ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को सुबह प्रभात फेरी श्री महावीर दिगंबर जैन पंचायती मंदिर, महालक्ष्मी नगर से निकली। समाज के अध्यक्ष श्री राजकुमार जी पाटोदी ने बताया कि प्रभात फेरी मैं पालकी में भगवान महावीर स्वामी जी की प्रतिमा जी को विराजित कर बेंड - बाजों के साथ मंदिर परिसर से आसपास के क्षेत्रों में भ्रमण कराया गया। इस दौरान तुलसी नगर जैन समाज के श्रद्धालु भी बड़ी संख्या में मंदिर प्रांगण में एकत्रित होकर प्रभात फेरी में सम्मिलित हुए। सभी भक्तगण महावीर भगवान की जय हो - जय हो गाते हुए चल रहे थे, व महिलाएं भक्ति नृत्य करते हुए चल रही थी। जगह-जगह पर पालकी में विराजित प्रभु जी की आरती उतारी गई । समाज के प्रचार प्रमुख सतीश जैन ने बताया कि महालक्ष्मी नगर जैन मंदिर प्रांगण पर श्री राजकुमार जी पाटोदी, अनिल मोदी, राजेश जैन, आर के जैन (एक्स.), हंसमुख जैन, श्रीमती सरला सामरिया, श्रीमती कुमुद जैन ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर समाज श्रेष्ठि श्री एम के जैन, सुशील पांड्या , राकेश विनायका, राजेंद्र सोनी, डॉ अशोक पाटनी, भरत शास्त्री, राजीव निराला, आशीष जैन, दिनेश जैन, पवन सिंघई, अनिल जैन इटको, संजय पापड़ीवाल, गिरीश रारा, मनीष जैन, ऋषभ जैन, सोशल रूप- ग्रेटर विजयनगर एवं अहिंसा के सदस्यों सहित बहुत अधिक संख्या में समाज जन उपस्थित थे।

कार्टून कोना.....

वसुधैव कुटुंबकम की भावना से सबको अपनेपन का प्यार दिया दादी जानकी ने

इंदौर। विदेशी जमीं पर अलग-अलग जाति, धर्म, भाषा, गोरे-काले जैसे अनेकों भेदभाव होते भी सर्व के प्रति आत्मिक भाव तथा वसुधैव कुटुंबकम की भावना रखते अपनेपन का प्यार दिया दादी जानकी ने। सृष्टि रचता एक ईश्वर है और हम सब आत्माएं उनकी संतान है। सारा विश्व एक परिवार है।

इस बात को मूर्त रूप देते हुए दादीजी ने भारतीय संस्कृति, मूल्यों और राजयोग की शिक्षा को विश्व के 140 देशों में पहुंचाया। उन्होंने न सिर्फ आध्यात्मिकता का ज्ञान दिया अपितु आध्यात्मिकता को जीना सिखाया। उक्त विचार इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने दादी जानकी जी के साथ बिताए 45 वर्षों का अनुभव सुनाते हुए रखें। अवसर था ब्रह्माकुमारी संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी की पांचवीं पुण्यतिथि पर ज्ञानशिखर में आयोजित कार्यक्रम का। आगे आपने कहा कि दादीजी ने आरंभ में 14 वर्ष गहन तपस्या के बाद 1970 में लंदन में ईश्वरीय ज्ञान का बीजारोपण किया और तब से 104 वर्ष की आयु तक अथक सेवाएं देती रही। उनका जीवन आध्यात्म का जीता जागता मिसाल था। उन्हें संसार की सबसे स्थितप्रज्ञ योगी का खिताब मिला। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वास्तुविद पंकज अग्रवाल ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि मैं 22 वर्ष पहले माउंट आबू ज्ञान सरोवर में दादी जानकी जी से मिला था। ब्रह्माकुमारी अनीता दीदी ने कहा कि दादी जी बेस्ट टीचर के साथ-साथ बेस्ट स्टूडेंट भी थी। वे अव्यक्त होने के तीन माह पहले इंदौर आई और डिवाइन विजडम स्पिरिचुअल आर्ट गैलरी का उद्घाटन किया।

पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ अपने कर्मों का समर्पण राम व हनुमान के चरणों में कर दें, जीवन में निर्मलता आ जाएगी

इंदौर। परमात्मा तो साक्षात आनंद का ही स्वरूप है। उनका दूसरा नाम आनंद ही है। सच्चे भक्त को हनुमान और राम नाम के स्मरण मात्र से ही आनंद की अनुभूति होती है। उनकी लीलाओं में प्राणी मात्र के प्रति कल्याण का ही भाव होता है। मन, वचन और कर्म से पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ यदि हम अपने कर्मों को भगवान राम और हनुमानजी के चरणों में समर्पित कर दें तो हमारे जीवन में भी निर्मलता और पवित्रता आ जाएगी। बाहरी दुनिया की सभी गतिविधियां हमें बाहर से जोड़ती है, लेकिन भगवान की भक्ति हमें अंदर से जोड़ती है। श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के बिना हमारी भक्ति सार्थक नहीं हो सकती। ये प्रेरक विचार हैं राष्टकवि और सरस्वती पुत्र पं.सत्यनारायण सतन के पंचकुइया स्थित दास बगीची पर श्री दास हनुमान जय सियाराम बाबा धार्मिक ट्रस्ट, हम्माल कालोनी युवा संगठन एवं नवग्रह शनिधाम के तत्वावधान में चल रहे श्रीराम हनुमान चरित्र महोत्सव के दौरान व्यक्त किए।